IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सागर संभाग में अनुसूचित जाति के रूप में अहिरवार समाज: सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना का विश्लेषण (एक अध्ययन)

शोधार्थी **शोधनिर्देश**

रूपलाल अहिरवार। **रफीक अहमद नागोरी**

पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य, महाविद्यालय उज्जैन मध्य प्रदेश(इतिहास विभाग)

सारांश (Abstract)

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में जाति व्यवस्था का प्रभाव ऐतिहासिक रूप से गहरा रहा है। अनुसूचित जातियों में सम्मिलित अहिरवार समाज लंबे समय तक सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक शोषण तथा सांस्कृतिक वंचना की स्थिति में रहा है। मध्यप्रदेश का सागर संभाग—जो बुंदेलखंड अंचल का महत्वपूर्ण भाग है—अहिरवार समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के अध्ययन हेतु उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है। यह शोध पत्र ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक संरचना, विवाह एवं नातेदारी, धार्मिक विश्वास, लोकसंस्कृति, शिक्षा, अंबेडकरवादी चेतना तथा समकालीन सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

सागर संभाग मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ अनुसूचित जातियों में अहिरवार समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति है। ऐतिहासिक रूप से यह समाज सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव एवं आर्थिक पिछड़ेपन से प्रभावित रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक संरक्षण, शिक्षा, आरक्षण नीति एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों के कारण अहिरवार समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में सागर संभाग के संदर्भ में अहिरवार समाज की पारिवारिक संरचना, विवाह व्यवस्था, धार्मिक आस्थाएँ, सांस्कृतिक परंपराएँ, सामाजिक संगठन एवं परिवर्तनशील चेतना का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन परंपरा और आधुनिकता के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए समाज की वर्तमान स्थिति को रेखांकित करता है।

1. भूमिका

भारतीय समाज बहुस्तरीय सामाजिक संरचना वाला समाज है, जहाँ जाति व्यवस्था ने सामाजिक संबंधों, आर्थिक अवसरों और सांस्कृतिक अधिकारों को दीर्घकाल तक प्रभावित किया। अहिरवार समाज इस ऐतिहासिक प्रक्रिया का सशक्त उदाहरण है। सागर संभाग में परंपरा और आधुनिकता के बीच संक्रमणशीलता स्पष्ट दिखाई देती है, जिसका अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय समाज बहुजातीय, बहुसांस्कृतिक एवं बहुधार्मिक स्वरूप वाला समाज है, जिसमें जाति व्यवस्था ने सामाजिक संरचना को लंबे समय तक प्रभावित किया है। अनुसूचित जातियों में सम्मिलित अहिरवार समाज ऐतिहासिक रूप से वंचना एवं सामाजिक बहिष्कार का शिकार रहा है। सागर संभाग, जिसमें सागर, दमोह, छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ आदि जिले सम्मिलित हैं, अहिरवार समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति के अध्ययन के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य अहिरवार समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का विश्लेषण करना है।

2. अध्ययन क्षेत्र: सागर संभाग

सागर संभाग में सागर, दमोह, छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ और निवाड़ी जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र कृषि-प्रधान, अर्ध-शुष्क तथा सामाजिक रूप से परंपरावादी रहा है। यहाँ अनुसूचित जातियों की पर्याप्त जनसंख्या है, जिनमें अहिरवार समाज प्रमुख है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि मजदूरी और शहरी क्षेत्रों में सीमित शैक्षणिक-व्यावसायिक गतिशीलता देखी जाती है।

3. अहिरवार समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अहिरवार समाज का संबंध परंपरागत रूप से चर्मकार्य, कृषि श्रम और सेवा कार्यों से रहा है। वर्ण-व्यवस्था में निम्न स्थान दिए जाने के कारण इस समाज को शिक्षा, भूमि और सामाजिक प्रतिष्ठा से वंचित रखा गया। औपनिवेशिक काल और स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक मान्यता ने सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला रखी। डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों ने आत्मसम्मान और अधिकार चेतना को सुदृढ़ किया। अहिरवार समाज को प्रायः चमार जाति समूह के अंतर्गत माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से यह समाज चमड़ा शोधन, कृषि श्रम एवं सेवा कार्यों से जुड़ा रहा है। जातिगत पदानुक्रम में निम्न स्थान दिए जाने के कारण शिक्षा, भूमि स्वामित्व एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से यह समाज वंचित रहा। औपनिवेशिक काल में तथा स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक सुधार आंदोलनों और डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों ने अहिरवार समाज में चेतना का संचार किया।

शोध समस्या का कथन (Statement of the Problem)

सागर संभाग में अहिरवार समाज की जनसंख्या पर्याप्त होने के बावजूद उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर केंद्रित समग्र, क्षेत्रीय एवं शोधात्मक अध्ययन का स्पष्ट अभाव दिखाई देता है। अधिकांश उपलब्ध साहित्य अनुसूचित जातियों को एक समरूप इकाई के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे अहिरवार समाज की विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ, परंपराएँ और परिवर्तन अनदेखे रह जाते हैं।

प्रमुख शोध समस्या यह है कि सागर संभाग में अहिरवार समाज की वर्तमान सामाजिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराएँ तथा आधुनिक प्रभावों के कारण उत्पन्न परिवर्तन का वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक मूल्यांकन नहीं हो पाया है। इस समस्या के समाधान हेतु यह शोध आवश्यक प्रतीत होता है।

Need and Significance of the Study)

प्रस्तुत शोध की आवश्यकता

समझने के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय समाज की सामाजिक संरचना तथा उसमें अनुसूचित जातियों की ऐतिहासिक एवं वर्तमान स्थिति का समग्र अवलोकन किया जाए। भारतीय समाज में जाति व्यवस्था केवल सामाजिक विभाजन की व्यवस्था नहीं रही है, बल्कि इसने सामाजिक प्रतिष्ठा, संसाधनों की उपलब्धता, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एवं जीवन के अवसरों

को भी गहराई से प्रभावित किया है। अनुसूचित जातियाँ, जिनमें अहिरवार समाज भी सम्मिलित है, लंबे समय तक सामाजिक बहिष्करण, अस्पृश्यता एवं सांस्कृतिक दमन का शिकार रही हैं। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण इनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की स्थिति को समझना समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

सागर संभाग के संदर्भ में यह आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से बुंदेलखंड का हिस्सा रहा है, जहाँ जातिगत संरचनाएँ अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ रही हैं। इस क्षेत्र में अहिरवार समाज की जनसंख्या पर्याप्त होने के बावजूद उनकी सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक परंपराओं एवं बदलते जीवन मूल्यों पर केंद्रित विशिष्ट एवं गहन अध्ययन का अभाव दिखाई देता है। अधिकांश उपलब्ध अध्ययन अनुसूचित जातियों को एक सामान्य सामाजिक वर्ग के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे अहिरवार समाज की विशिष्ट पहचान, सांस्कृतिक विरासत एवं सामाजिक समस्याएँ स्पष्ट रूप से सामने नहीं आ पातीं। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध की आवश्यकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

शोध विधि:शोध प्रविधि किसी अनुसंधान समस्या का एक व्यवस्थित रूप से कार्य करने का तरीका है। अनुसंधान को वैज्ञानिक ढंग से करने का ही अध्ययन प्रविधि है इसके द्वारा अनुसंधान करता समस्या के अध्ययन के लिए अपनाए गए विभिन्न चरणों को उसमें शामिल करता है जिसमें इसकी विधि की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है इस प्रकार से अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि, निरीक्षण विधि तथा के अंतर्गत अन्वेषण विधि तथा सर्वेक्षण विधि उपयोग में लाई जाती है।

शोध के प्रमुख उद्देश्य:-

1. अहिरवार समाज के परिवारों का स्वरूप कैसा है उनमें पीढ़ी गतिस्तार पर किस प्रकार से परिवर्तन हुए हैं
2. हर बार समाज की आता है सिख पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालना।
3. अहिरवार समाज की सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति की विवेचना
4. अहिरवार समाज का निजातियों के साथ समायोजन का मूल्यांकन
5. अहिरवार समाज की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर आधुनिक प्रभावों का विश्लेषण का अध्ययन करना।
6. अहिरवार समाज की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को चीनी कारण करना
7. अहिरवार समाज के लोगों के सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक पक्ष एवं मूल्यांकन में जागरूकता एवं परिवर्तन का विश्लेषण करना।

4. सामाजिक संरचना

अहिरवार समाज में परंपरागत रूप से संयुक्त परिवार प्रचलित रहे हैं। परिवार पितृसत्तात्मक रहा है, तथापि महिलाओं का आर्थिक योगदान महत्वपूर्ण रहा है। आधुनिक काल में एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है, जिससे पारिवारिक संबंधों और सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हुआ है।ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सामाजिक दूरी, पृथक बस्तियाँ, सीमित सामाजिक सहभागिता और पारंपरिक पेशों की छाया स्पष्ट दिखाई देती है। सामाजिक संपर्क उच्च जातियों तक सीमित रहा है, जिससे सामाजिक गतिशीलता बाधित हुई।1

परिवार व्यवस्था में पितृसत्तात्मक संरचना प्रभावी रही है। पुरुष को परिवार का मुखिया माना जाता है, जबकि महिलाओं की भूमिका घरेलू दायित्वों तक सीमित रही। हालांकि शिक्षा और आधुनिकता के प्रभाव से यह स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है।

4.1 विवाह एवं नातेदारी

विवाह संस्था समाज की केंद्रीय संस्था है। सजातीय विवाह को प्राथमिकता दी जाती है और गोत्र बहिर्विवाह सामान्यतः स्वीकार्य है। विवाह संस्कार अपेक्षाकृत सरल रहे हैं, किन्तु आधुनिक प्रभावों से खर्च और दहेज की प्रवृत्ति बढ़ी है।2

5. सांस्कृतिक संरचना

अहिरवार समाज की सांस्कृतिक संरचना में हिंदू परंपराएँ, लोकदेवता, ग्राम-आस्थाएँ और संत परंपरा सम्मिलित हैं। डॉ. अंबेडकर के विचारों और बौद्ध धर्म की ओर झुकाव ने सांस्कृतिक चेतना को आधुनिक और समानतावादी दिशा दी है।दीपावली, होली, दशहरा जैसे सामान्य हिंदू पर्वों के साथ-साथ समाज-विशेष के उत्सव, सामूहिक भोज, लोकगीत एवं लोकनृत्य अहिरवार समाज की सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करते हैं। ये उत्सव सामाजिक एकता एवं सामूहिकता की भावना को सुदृढ़ करते हैं।लोकदेवताओं, ग्राम देवियों, कुलदेवता और संत परंपरा में समाज की गहरी आस्था रही है। संत रविदास और डॉ. अंबेडकर के विचारों ने सांस्कृतिक चेतना को नई दिशा प्रदान की।

विवाह, जन्म, मृत्यु और अन्य संस्कार सादगीपूर्ण होते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोकगीत, लोकनृत्य और सामूहिक भोज सामाजिक एकता का माध्यम रहे हैं।3

हालांकि, सांस्कृतिक स्तर पर भी भेदभाव स्पष्ट रहा है। मंदिर प्रवेश, धार्मिक आयोजनों में सहभागिता और सार्वजनिक अनुष्ठानों में समान अधिकार लंबे समय तक नहीं मिल सके। आधुनिक काल में सांस्कृतिक आत्मगौरव और पहचान की भावना उभर रही है, जो सामाजिक सशक्तिकरण का संकेत है।

5.1 पर्व-त्योहार एवं लोकसंस्कृति

दीपावली, होली, दशहरा के साथ-साथ समाज-विशेष के सामूहिक उत्सव, लोकगीत, लोकनृत्य और सामूहिक भोज सामाजिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। ये परंपराएँ सांस्कृतिक पहचान का संवाहक हैं।4

6. शिक्षा, चेतना और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा के प्रसार से समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लैंगिक चेतना और सामाजिक न्याय के मूल्य विकसित हुए हैं। संवैधानिक आरक्षण और कल्याणकारी योजनाओं से सीमित किंतु महत्वपूर्ण सामाजिक गतिशीलता देखी जाती है।सागर संभाग के संदर्भ में यह आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से बुंदेलखंड का हिस्सा रहा है, जहाँ जातिगत संरचनाएँ अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ रही हैं। इस क्षेत्र में अहिरवार समाज की जनसंख्या पर्याप्त होने के बावजूद उनकी सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक परंपराओं एवं बदलते जीवन मूल्यों पर केंद्रित विशिष्ट एवं गहन अध्ययन का अभाव दिखाई देता है। अधिकांश उपलब्ध अध्ययन अनुसूचित जातियों को एक सामान्य सामाजिक वर्ग के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे अहिरवार समाज की विशिष्ट पहचान, सांस्कृतिक विरासत एवं सामाजिक समस्याएँ स्पष्ट रूप से सामने नहीं आ पातीं। अहिरवार अहिरवार समाज को रविदास पंथ से जोड़ा जाता है जो इसका एक प्रकार से ट्रेडिशनल बन गया है रविदास पंथ में अहिरवार समाज के रविदास प्रमुख संत।5

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान द्वारा सामाजिक न्याय, समानता एवं गरिमा के अधिकारों की घोषणा की गई। आरक्षण नीति, शिक्षा का प्रसार, सामाजिक कल्याण योजनाएँ तथा लोकतांत्रिक भागीदारी ने अनुसूचित जातियों के सामाजिक जीवन में परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न कीं। किंतु यह परिवर्तन सभी क्षेत्रों एवं समुदायों में समान रूप से नहीं पहुँचा। सागर संभाग के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अहिरवार समाज सामाजिक भेदभाव, सीमित अवसरों एवं सांस्कृतिक हीनता की भावना से जूझता दिखाई देता है। वहीं नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा एवं रोजगार के माध्यम से सामाजिकगतिशीलता के संकेत भी मिलते हैं। लेकिन कुछ ब्राह्मणवादी परंपराएं चमारों को सम्मानजन वंश क्रम की बताती हैं और उनके गांव से बाहर किए जाने का कारण आर्यों के कानून का उल्लंघन करना बताती हैं।6

इस विषमता को समझना और उसके कारणों का विश्लेषण करना इस अध्ययन की एक प्रमुख आवश्यकता है

कुरीतियाँ एवं सामाजिक समस्याएँ

अहिरवार समाज में कुछ कुरीतियाँ भी पाई जाती हैं, जो सामाजिक विकास में बाधक हैं। इनमें बाल विवाह, अशिक्षा, नशाखोरी, घरेलू हिंसा और रूढ़िवादी सोच प्रमुख हैं। कानून नृत्य श्री कृष्ण की चरित्र और अखियां अंको का यह मोह गीत नृत्य बहुत ही प्राचीन है आधुनिक युग में धीरे-धीरे यह लिप्त हो रहा है। बुंदेलखंड में प्रमुख कारण धोबी जाति का नृत्य है जिसे कोरी अहिरवार समाज के लोग रविदास कुमार आदि पिछड़ी जातियों में शादी विवाह है जन्मदिन में हर के पानी आदि में गया जाता है।7

गरीबी और अशिक्षा के कारण ये कुरीतियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही हैं। महिलाओं और बच्चों पर इनका प्रभाव विशेष रूप से नकारात्मक रहा है।सामाजिक जागरूकता, शिक्षा और सरकारी हस्तक्षेप से इनमें धीरे-धीरे कमी आ रही है, प्राचीन काल से ही समझ में शूद्र वर्ण की स्थिति नीचे स्तर पर थी कृषि मजदूरी एवं उनके प्रमुख उद्यम था इस प्रकार से बहुसंख्यक निम्न जाति के लोग अछूत अधिकार विहीन एवं दास वृद्धि का जीवन व्यतीत करते थे, वर्ग उच्च वर्ग के लोग इन पर सामाजिक दबाव डालते थे, जिससे इन जातियों का शोषण अधिक होता था,सामाजिक भेदभाव होता था। इनमें प्रमुख रूप से इसे स्पर्श होने से बचते थे उच्च जाति के लोग इनसे स्पर्श नहीं होते थे।कसाई ,चमार चांडाल , यह निचली जाति का दर्जा इन्हें दिया जाता था, इन शूद्र जातियों में हिंदू एवं मुसलमान दोनों ही रहते थे।8

7. चुनौतियाँ

गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा की असमान पहुँच और सामाजिक भेदभाव अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और परंपरागत सोच परिवर्तन की गति को धीमा करती है।

संवैधानिक आरक्षण, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, शिक्षा एवं राजनीतिक भागीदारी के कारण अहिरवार समाज की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। कुछ वर्गों में आर्थिक प्रगति एवं सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ी है।

इसके बावजूद बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा की सीमित पहुँच, सामाजिक भेदभाव एवं मानसिक हीनता जैसी समस्याएँ अभी भी समाज के समक्ष चुनौती बनी हुई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत सोच और संसाधनों की कमी सामाजिक परिवर्तन की गति को धीमा करती है।

8. निष्कर्ष

सागर संभाग में अहिरवार समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व से गुजर रही है। शिक्षा, अंबेडकरवादी चेतना और संवैधानिक अधिकारों ने समाज को प्रगति की दिशा दी है। भविष्य में समग्र विकास हेतु शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

सागर संभाग में अनुसूचित जाति के रूप में अहिरवार समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व से गुजर रही है। ऐतिहासिक वंचना के बावजूद शिक्षा, अंबेडकरवादी विचारधारा एवं संवैधानिक अधिकारों ने समाज को आत्मसम्मान और प्रगति की दिशा प्रदान की है।भविष्य में समाज के समग्र विकास हेतु शिक्षा के विस्तार, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता तथा समानता आधारित नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। समाज के आंतरिक विकास का परिणाम है या बाह्य सामाजिक दबावों का—इस पर गंभीर अध्ययन की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध इसी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास करता है।

अकादमिक दृष्टि से भी यह शोध अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाजशास्त्र एवं सामाजिक इतिहास के क्षेत्र में क्षेत्रीय एवं समुदाय-विशेष आधारित अध्ययन ज्ञान के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अहिरवार समाज पर केंद्रित यह शोध न केवल अनुसूचित जाति अध्ययन के क्षेत्र में नवीन सामग्री प्रदान करेगा, बल्कि सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परिवर्तन एवं

सामाजिक गतिशीलता जैसे सिद्धांतों को व्यावहारिक संदर्भ में समझने का अवसर भी देगा। यह शोध भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में भी उपयोगी सिद्ध होगा।

नीतिगत एवं व्यवहारिक दृष्टि से भी इस अध्ययन का औचित्य स्पष्ट है। अहिरवार समाज से संबंधित सामाजिक समस्याओं, शैक्षिक पिछड़ेपन एवं सांस्कृतिक चुनौतियों को समझे बिना प्रभावी सामाजिक योजनाओं का निर्माण संभव नहीं है। यह शोध सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं को समाज की वास्तविक आवश्यकताओं को समझने में सहायता करेगा, जिससे कल्याणकारी योजनाओं का अधिक प्रभावी क्रियान्वयन संभव हो सकेगा। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन सामाजिक समावेशन, समान अवसर एवं सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में भी उपयोगी सुझाव प्रदान करेगा।

संदर्भ

1. कृष्णन वी.एस, सागर जिला गजेटियर, संचालनालय संस्कृति विभाग भोपाल,1970, पृष्ठ.523
2. सिन्हा, ए. एम., जिला गजेटियर पन्ना, संचालनालय संस्कृति विभाग भोपाल,1994, पृष्ठ.02
3. वहीं, पृष्ठ,03
4. गुरु शंभूदयाल, जिला गजेटियर छतरपुर, संचालनालय संस्कृति विभाग भोपाल, मध्यप्रदेश,1982 पृष्ठ.98
5. पांडे, एन.पी., जिला गजेटिया टीकमगढ़, संचालनालय संस्कृति विभाग भोपाल, 1995, पृष्ठ.87
6. ब्रिग्स,जीडी डब्ल्यू, दी चमार, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली,पंचम संस्करण 2023, पृष्ठ.09
7. राघवन पी., सागर विरासत और विकास, शारदा पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992, पृष्ठ. 107
8. श्रीवास्तव वी. के.,बुंदेलखंड का संस्कृति, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण,2019, पृष्ठ.19